



विदेशी सब्जियों की समन्वित खेती से मिली सफलता

भूपेन्द्र सिंह खड़ायत, मुक्ता नैनवाल, उमा नौलिया और सी. तिवारी

उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में खेती आज कई चुनौतियों का सामना कर रही है। वन्य जीवों का बढ़ता जोखिम, जलवायु परिवर्तन, खेती की बढ़ती लागत और रोजगार की तलाश में युवाओं का पलायन कृषि व्यवस्था को लगातार प्रभावित कर रहा है। ऐसे समय में कुछ किसान अपनी मेहनत, नवाचार और दृढ़ संकल्प से पहाड़ी खेती को नई दिशा दे रहे हैं। अल्मोड़ा जिले के प्रगतिशील किसान श्री प्रकाश चन्द्र उपाध्याय ने बंजर भूमि को उपजाऊ बनाकर पारंपरिक खेती, पशुपालन और विदेशी सब्जियों के माध्यम से लाभकारी कृषि मॉडल विकसित किया है। इनकी सफलता यह संदेश देती है कि वैज्ञानिक सोच और निरंतर प्रयासों से पहाड़ों में भी खेती को आत्मनिर्भर और लाभकारी बनाया जा सकता है।

सेवानिवृत्ति के बाद जहां अधिकांश लोग शांत और सुविधाजनक जीवन की तलाश करते हैं, वहीं उत्तराखंड के जिला-अल्मोड़ा अंतर्गत ग्राम-खनूली के निवासी श्री प्रकाश चन्द्र उपाध्याय ने खेती को अपनी नई पहचान बनाने का निर्णय लिया। वर्ष 2017 में शिक्षक पद से सेवानिवृत्त होने के बाद इन्होंने पहाड़ छोड़ने के बजाय अपनी मिट्टी और गांव से जुड़े रहने का संकल्प लिया। वर्ष 2018 में इन्होंने लगभग 10 एकड़ बंजर भूमि लीज पर लेकर खेती की शुरुआत की।

प्रारंभ में भूमि पथरीली और अनुपजाऊ थी, लेकिन लगातार मेहनत, जुताई और गोबर की खाद के प्रयोग से इन्होंने धीरे-धीरे उसे उपजाऊ खेतों में बदल दिया।

शुरुआत में इन्होंने गेहूं, धान, मूँडुवा और सोयाबीन जैसी पारंपरिक फसलों की खेती की। साथ ही, खेती को टिकाऊ और लाभकारी बनाने के उद्देश्य से 2 गाय और 10



आलू की सफल खेती

बकरियों के साथ पशुपालन भी शुरू किया। पशुपालन से उन्हें खेतों के लिए जैविक खाद के साथ अतिरिक्त आय का स्रोत भी प्राप्त हुआ। वर्तमान में इनके पास लगभग 50 बकरियाँ हैं, जो इनकी आय का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी हैं।

कुछ वर्षों बाद इन्होंने नकदी फसलों और सब्जी उत्पादन की ओर कदम बढ़ाया। इन्होंने बंदगोभी, फूलगोभी, मटर, लोबिया, कद्दू, तोरई और लौकी जैसी सब्जियों की खेती शुरू की। इस दौरान जंगली पशुओं से फसलों को भारी नुकसान भी हुआ, लेकिन इन्होंने हार मानने के बजाय खेतों की घेराबंदी कर समस्या का समाधान निकाला। कोरोना काल में बाजार बंद होने के कारण तैयार सब्जियां खेतों में खराब हो गईं और उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा, फिर भी इन्होंने खेती से अपना विश्वास नहीं खोया।

धीरे-धीरे इनकी मेहनत रंग लाई और इनका संपर्क दिल्ली के व्यापारियों से हुआ। आजादपुर मंडी के व्यापारियों की मांग के अनुसार इन्होंने ब्रोकली, जुकीनी, रेड कैबेज और सलाद जैसी विदेशी सब्जियों की खेती शुरू की। इन फसलों ने इनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि की। वर्तमान में उपाध्याय जी पारंपरिक और विदेशी दोनों प्रकार की सब्जियों की सफल खेती कर रहे हैं। खेती और पशुपालन से उन्हें लगभग 13.74 लाख रुपये की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त हो रही है तथा इन्होंने वर्ष 2027 तक 15-20 लाख रुपये वार्षिक आय का लक्ष्य निर्धारित किया है।

इनके नवाचार, परिश्रम और उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा आयोजित “119वें अखिल भारतीय किसान मेले (13-16 मार्च, 2026)” में इन्हें ‘प्रगतिशील कृषक पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया। श्री प्रकाश चन्द्र उपाध्याय अपनी सफलता का श्रेय कृषि विज्ञान केंद्र, मटेला (अल्मोड़ा) तथा उद्यान विभाग, अल्मोड़ा से प्राप्त मार्गदर्शन और सहयोग को भी देते हैं।

श्री प्रकाश चन्द्र उपाध्याय का स्पष्ट संदेश है कि पहाड़ों से पलायन ही एकमात्र विकल्प नहीं है। यदि आधुनिक तकनीकों, बाजार आधारित खेती, सही फसलों के चयन और निरंतर मेहनत के साथ कार्य किया जाए, तो पहाड़ों में भी खेती को लाभकारी बनाया

सारणी: फसल एवं अन्य उद्यमों से प्राप्त वार्षिक आय एवं व्यय

फसल/उद्यम	क्षेत्रफल (एकड़)	कुल आय (लाख रुपये में)
ब्रोकली	1.0	1.50
पकचोई	1.0	0.60
धनिया	0.5	0.20
लौकी	1.0	6.00
तुमड़	1.0	3.00
कटू	1.0	6.00
तोरई	0.5	1.80
करेला	0.09	0.10
खीरा	0.09	0.06
आलू	2.0	0.50
सरसों	6.0	1.40
चायनीज गोभी	0.09	0.06
लहसुन	0.09	0.20
पशुपालन	-	0.45
बकरी पालन	-	2.12
कुल आय	23.99	
कुल व्यय	10.25	
शुद्ध लाभ	13.74	

जा सकता है। इनकी सफलता की कहानी आज उन युवाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी है, जो रोजगार की तलाश में गांव छोड़ने को मजबूर होते हैं। वास्तव में, इनका सफर

यह सिद्ध करता है कि दृढ़ इच्छाशक्ति और मेहनत से बंजर जमीन को भी समृद्धि और आत्मनिर्भरता का आधार बनाया जा सकता है।

भाकृअनुप की मासिक लोकप्रिय पत्रिका

‘खेती’ जुलाई, 2026 ‘आजीविका उद्यमिता विशेषांक’ के प्रमुख आकर्षण

- ◆ ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ता स्वरोजगार एवं सशक्तिकरण
- ◆ कृषि व्यवसाय ऊष्मायन केन्द्र से उद्यमिता
- ◆ कृषि उपकरण बैंक द्वारा उद्यमिता को बढ़ावा
- ◆ बहुआयामी कृषि मॉडल से आत्मनिर्भरता
- ◆ मशरूम उत्पादन बना आय का सशक्त माध्यम
- ◆ प्राकृतिक खेती बनी उद्यमिता का आधार
- ◆ सफल उद्यमिता में एबीआई-द्राक्षा की प्रभावी भूमिका
- ◆ मखाना आधारित उद्यमिता से महिला सशक्तिकरण
- ◆ आधुनिक खेती से टमाटर उत्पादन में मिली सफलता
- ◆ गोबर आधारित प्रसंस्करण से आर्थिक उत्थान
- ◆ संरक्षित कृषि प्रणाली से आय वृद्धि
- ◆ परंपरागत खेती से उद्यमिता तक की यात्रा

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंधन निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012

दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in